I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 295-301
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article
Reg. No.: MH-NGP/0000167
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

पुनर्वास कालोनियों के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध, का तुलनात्मक अध्ययन

पवन कुमार यादव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग)
रजत कॉलेज लखनऊ (उ०प्र०)

Communicated : 04.02.2023 | Revision : 09.03.2023 Accepted : 07.04.2023 | Published: 30.05.2023

सारांश :
प्रस्तुत अध्ययन पुनर्वास कालोनियों के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध, का तुलनात्मक अध्ययन करना है तथा न्यादर्श के रूप में जनपद कानुपर नगर के निर्धारित ४०० में से २००-२०० छात्र-छात्राओं चयन करके प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श से प्रदत्त संकलन हेतु प्रो० एस०पी० अहलूवालिया के उपकरण का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र की परिकल्पना के रूप में पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तथा पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्षतः पाया गया कि पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में ०.०१ विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर है। एवं पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में किसी भी विश्वास स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि आत्मबोध व्यक्ति के व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहारों आदि के सम्बन्ध में जो विचार रखता है वही उसका आत्मबोध होता है। व्यक्ति का आत्मबोध उसके विचारों पर आधारित होता है।

प्रमुख शब्द- पुनर्वास कालोनियॉं, प्राथमिक स्तर,आत्मबोध

प्रस्तावना :

आज के छात्र एवं छात्रायें ही देश के भावी कर्णधार हैं और इसके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना कोई भी छात्र व छात्रा समाज में अपना स्थान नहीं बना सकती है। कहा भी जाता है कि बालक समाज के दर्पण के रूप में प्रतिबिम्बित होते है, जो अपनी कार्यकुशलता व व्यक्तित्व से समाज को प्रतिबिम्बित करता है। व्यक्तित्व लक्षणों के अर्थ को स्पष्ट करते हुए क्रच और क्रचफील्ड(1985) ने लिखा कि– ''लक्षण व्यक्ति की एक स्थायी विषेषता है जिसके द्वारा विभिन्न दषाओं मे लगभग एक सा व्यवहार होता है''। व्यक्तित्व लक्षण वास्तव मे व्यवहार के विषिष्ट गुण है जो आपस में समन्वित होते है और आत्मबोध से प्रभावित होते है। कुछ व्यक्तित्व लक्षण मे एक दूसरे के साथ संयुक्त होते हैं।

जब बालक मे आत्मबोध धनात्मक प्रकार का होता है। तब बालक मे आत्मविष्वास, आत्म गौरव, दूसरो के साथ सम्बन्धों को सही मूल्यांकन की योग्यता, स्वंय को वास्तविक रूप में देखने की योग्यता जैसे लक्षण विकसित होते है। इसके विपरीत जब बालक मे आत्मबोध ऋणात्मक प्रकार का होता है तब बालक मे अनिष्चियता की भावना, हीनता की भावना, आत्मविष्वास का आभाव तथा निम्न आत्म गौरव जैसे लक्षण

विकसित होते है। जब बालक मे धनात्मक आत्मबोध होता है तब उसके जीवन मे विभिन्न परिस्थितियों मे समायोजन अच्छा, मधुर और आनन्ददायक होता है तथा ऋणात्मक आत्म–प्रत्यय की दषा मे उसका समायोजन दुर्बल और दुःखदायक होता है। बालक के व्यक्तित्व प्रतिमान का विकास मुख्यतः वंषानुक्रम, अधिगम और पारिवारिक अनुभवों से अधिक सार्थक ढ़ग से प्रभावित होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकतायें हैं और इन्हीं की पूर्ति के लिए वह लगातार प्रयत्नशील रहता है तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करके अच्छा जीवन बिताने की प्रेरणा से देश के हर कोनों से आकर महानगरों में रोजी–रोटी की तलाश या व्यवसाय करने लगते है आवासीय जटिल परिस्थितियों के चलते झुग्गी–झोपड़ियां बनाकर या अवैधानिक कालोनियां बनाकर रहने लगते हैं और हमेशा रोजी–रोटी के विषय में सोंचने वाले ये लोग शिक्षा के विषय में सोंच भी नहीं पाते इतना ही नहीं इनके बच्चे बाल्यावस्था में ही मजदूरी करके उदर पूर्ति करते है किन्तु आज समाज में शिक्षा का अपना एक महत्व है जिसके कारण लोगों में शिक्षा के प्रति जाग्रति आई सरकार ने भी सभी को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया है अतः पुनर्वास बस्तियों में भी प्राथमिक शिक्षा के लिए विद्यालय खोले जा रहे हैं। निजी संस्थाओं और सरकार के माध्यम से विभिन्न जगहों पर विद्यालय खोले गये जिससे हमारे देश के विद्यार्थी उज्जवल भविष्य के प्रगति चिन्ह होगें आधार वाली प्राथमिक शिक्षा नागरिकों के जीवन की आधारशिला बनेगी।

चूँकि कानपुर एक औद्योगिक नगर है अतः यहाँ पर पुनर्वास बस्तियाँ बहुत अधिक हैं जिसके कारण प्राथमिक शिक्षा में सुधार तीव्र गति से किये जरूर गये किन्तु निम्न वर्ग के लोगों की शिक्षा के बारे में तुलनात्मक कार्य कम हुए। कानपुर के पुनर्वास बस्तियों तथा अनाधिकृत बस्तियों में भी प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यकता महसूस करके खोलने की योजना बनायी गई।

प्रारम्भ में इन बस्तियों में निःशुल्क मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था की गई जो बाद में सभी प्राथमिक विद्यालयों में इस व्यवस्था का प्रसार किया गया, आज कानपुर नगर निगम तथा शिक्षा परिषद के सभी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को निःशुल्क शिक्षा, वर्दी किताबें, बैग और मध्यान्ह भोजन के साथ–2 छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था की गई है। कानपुर नगर निगम के 1851 विद्यालय तथा नगर–निगम द्वारा मान्यता प्राप्त 557 प्राथमिक विद्यालय हैं कुछ समय पूर्व से कानपुर प्रशासन के शिक्षा विभाग ने भी प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था शुरू की है जहाँ पर ऐसी शिक्षा की व्यवस्था है उन विद्यालयों को सर्वोदय विद्यालय कहा जाता है कानपुर नगर की ये शिक्षा संस्थायें पुनर्वास कालोनियों में भी चलती हैं। जहाँ के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ये कालोनियाँ P.W.D., K.D.A. व M.C.D. आदि की जमीनों पर बनी झोपड़ियों और झुग्गियों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए नियोजित रूप से उपलब्ध करायी जाती है उन कालोनियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध का अध्ययन करना।

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें –

1. पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य :

राव, गनपत (2015):–ने आत्मबोध का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का प्रमुख उददेश्य यह पता लगाना था कि उत्तम आत्मबोध वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है अथवा निम्नतम आत्मबोध वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है। अध्ययन में शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी। अध्ययन में आत्मबोध का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को ज्ञात करने के लिए मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। सांख्यकीय गणनोपरान्त परिणाम में पाया कि जिन विद्यार्थियों का आत्मबोध उत्तम था उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च थी।

ट्रेटविन (2006) एण्ड ट्रेसी (2017):– ने अपने अध्ययन में जूनियर स्कूलों के विद्यार्थियों को दो वर्गो निम्न और उच्च आत्मबोध के तुलनात्मक अध्ययन में विद्यार्थियों की चिन्ता, उपलब्धि, प्रेरणा, बुद्धि का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि उच्च और निम्न आत्मबोध वर्ग वाले जूनियर स्कूल के विद्यार्थियों की चिन्ता और बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि उपलब्धि और प्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। जिससे यह सिद्ध होता है कि जूनियर स्कूलों के विद्यार्थियों में चिन्ता और बुद्धि उनके आत्मबोध में अन्तर पाया जाता है। जबकि शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा उनके सकारात्मक रूप में सहायक होते है।

डॉ0 आर0के0एडसुल एवं श्रीमती मुधबाई गरवारे (2021)– ने विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्तर और आत्मबोध का अध्ययन किया। अध्ययन का प्रमुख उददेश्य यह पता लगाना था कि क्या सामाजिक आर्थिक स्तर और आत्मबोध पर कोई सार्थक सह सम्बन्ध होता है। अध्ययन में विद्याथियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्तर और आत्मबोध पर प्रभाव को ज्ञात करने के लिए मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। सांख्यकीय गणनोपरान्त परिणाम में पाया कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी सामान्यतः नकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक स्वभाव के पाये गये। जबकि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक स्वभाव के पाये गये।

शोध विधि :

शोधकर्त्री ने अपने इस शोध कार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधियों का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए हैं।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में जनपद कानुपर नगर के उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के प्राथमिक स्तर के प्राथमिक विद्यालयों से क्रमशः 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को वर्गबद्व प्रतिचयन विधि द्वारा लिया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु प्रो0 एस0पी0 अहलूवालिया के उपकरण का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ : न्यादर्श के कुल शिक्षकों के मध्यमान व मानक विचलन तथा प्रमाणिक त्रुटि व क्रान्तिक निष्पत्ति ज्ञात की गई है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

परिणाम :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध के परीक्षण प्राप्ताँक का मध्यमान 41.16 व 47.68 तथा मानक विचलन 12.11 व 25.09 है। दोनों के मध्यमानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात के मान की गणना की गयी। गणना से क्रान्तिक अनुपात का मान 3.32 प्राप्त हुआ, जो 0.05 एवं 0.01 विश्वास के स्तर पर तालिका मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर है।

व्याख्या :–

उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट होता है कि पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में 0.01 विश्वास के स्तर पर तो सार्थक अन्तर है। इससे स्पष्ट है कि 0.01 विश्वास के स्तर पर पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में छात्राओं का आत्मबोध उच्च है।

निष्कर्ष :– अतः परिकल्पना संख्या–01 ''पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है''–यह परिकल्पना 0.01 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। इसके निम्नांकित कारण हो सकते है–

पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में अन्तर छात्रों की तुलना में छात्राओं का उच्च होना उनके आत्मविश्वास, उच्च शैक्षिक उपलब्धियाँ, पारिवारिक अनुशासन, पारिवारिक रहन–सहन, कर्तव्य बोध आदि देखने को मिलता है।

छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा विषय गम्भीरता, कर्तव्यनिष्ठता, पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह आदि जैसे गुण सुदृढ़ता के रूप में पाये जाते हैं।

परिणाम :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध के परीक्षण प्राप्ताँक का मध्यमान 42.70 व 41.85 तथा मानक विचलन 12.12 व 11.70 है। दोनों के मध्यमानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात के मान की गणना की गयी। गणना से क्रान्तिक अनुपात का मान 1.01 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 एवं 0.01 विश्वास के स्तर पर तालिका मान 1.96 एवं 2.58 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में किसी भी विश्वास स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या :– उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट होता है कि पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में किसी विश्वास के स्तर पर तो सार्थक अन्तर नहीं है। इससे स्पष्ट है कि पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं का आत्मबोध समान रूप से पाया गया है।

निष्कर्ष :–

अतः परिकल्पना संख्या–02 '' पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'–यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में किसी विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसके निम्नांकित कारण हो सकते है–

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में समानता पायी गयी इसका प्रमुख कारण गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में समान रूप से शिक्षा का आदान–प्रदान, समान शैक्षिक परिवेश, समानता का व्यवहार आदि देखने को मिलता है जिससे छात्र–छात्राओं की आत्म प्रत्यय समान रूप से उत्पन्न होती है।

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय अनुशासन, कक्षावातावरण, शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, सीखने व सिखाने की प्रवृत्ति आदि समान रूप से देखने को मिलती है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष :

पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर है।

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में किसी भी विश्वास स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक उपयोगिता :

आत्मबोध व्यक्ति के व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहारों आदि के सम्बन्ध में जो विचार रखता है वही उसका आत्मबोध होता है। व्यक्ति का आत्मबोध उसके विचारों पर आधारित होता है।

जब बालक मे आत्मबोध धनात्मक प्रकार का होता है। तब बालक मे आत्मविष्वास, आत्म गौरव,

दूसरो के साथ सम्बन्धों को सही मूल्यांकन की योग्यता, स्वंय को वास्तविक रूप में देखने की योग्यता जैसे लक्षण विकसित होते है। इसके विपरीत जब बालक मे आत्मबोध ऋणात्मक प्रकार का होता है तब बालक मे अनिष्चियता की भावना, हीनता की भावना, आत्मविष्वास का आभाव तथा निम्न आत्म गौरव जैसे लक्षण विकसित होते है। जब बालक मे धनात्मक आत्मबोध होता है तब उसके जीवन मे विभिन्न परिस्थितियों मे समायोजन अच्छा, मधुर और आनन्ददायक होता है तथा ऋणात्मक आत्म–प्रत्यय की दषा मे उसका समायोजन दुर्बल और दुःखदायक होता है। बालक के व्यक्तित्व प्रतिमान का विकास मुख्यतः वंषानुक्रम, अधिगम और पारिवारिक अनुभवों से अधिक सार्थक ढ़ग से प्रभावित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

कपिल, एच.के.,(2004) : अनुसंधान विधियाँ, आगरा, भार्गव भवन।

गैरिट, हेनरी ई0,(1989): शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, नई दिल्ली कल्याणी पब्लिशर्स।

गुप्ता डॉ0 एस0 पी0 एवं अलका गुप्ता (2004); उच्चतर षिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद षारदा पुस्तक भवन ,द्वितीय संस्करण।

पाण्डेय, रामषकल (2004) : षैक्षिक नियोजन ओर वित्त प्रबन्धन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर ।

राय, पारसनाथ (2007) : अनुसंधान–परिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

शर्मा राधारानी (1981) : शैक्षिक उपलब्धि में आत्म प्रत्यय आकांक्षा स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव का अध्ययन (पी–एच0डी0 शिक्षाशास्त्र, मेरठ विश्वविद्यालय) पृष्ठ 143

राव, गनपत (2005) : www.research in Education in India

Trautwein etal. 2006 and Tracy 2007) www.Research in foreign studies of Education

Dr. R. K. Adsul Smt. Mathubai Garware Kanya Mahavidyalaya, SangliVol. 1, Issue .II / March 2011 Indian Streams Research Journal.

तालिका संख्या–1

पुनर्वास कालोनियों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में अन्तर की सार्थकता की जाँच

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	छात्र	200	41.16	12.11	1.96	3.32	0.01 स्तर पर सार्थक
02	छात्राएं	200	47.68	25.09			

तालिका संख्या–2

पुनर्वास कालोनियों के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध में अन्तर की सार्थकता की जाँच

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	छात्र	400	42.70	12.12	0.84	1.01	असार्थक
02	छात्राएं	400	41.85	11.70			